# कौन हूँ मैं?

मैं हूँ बेहद खूबसूरत,

जिस्मानी नहीं है सौंद्रर्य,

आत्मबोध से गढ़ी है यह

सुंदरता मैंने अपने लिए।

घूंघट से ताज तक का सफर,

तय किया है मैंने

पर आँखों में शर्म और संस्कारों में कमी न आने दी।

नज़ाकत के साथ दृढ़ता है ,

पर सब कुछ खोकर

अगले ही पल नया संसार

रचने का बुलंद जज़्बा भी है।

मैं खुद का आईना हूँ

जो स्वयं से झूठ नहीं बोलता।

प्रेयसी, पत्नी, माँ, बहन और

मात्र 'औरत' बन कर

बहुत प्यार किया इन पुरूषों को।

बरसों तक मौज़ें, रूमाल, नाश्ता

इनके इर्द–गिर्द घूमी है दुनिया मेरी

पर जब नींद टूटी तो

'मेरा कुछ भी नहीं है' समझ में आया।

पूरी ऊर्जा से जिनके जीवन में रंग भरे,

एक पल न लगाया

उन्होंने जीवन को बेरंग करने में।

कदम बहुत छोटे थे

पर निशान बहुत गहरे बन गए।

प्रजन्न, पोषण और अलंकार

के दायित्व को निभाते थक चुकी हूँ मैं।

देह से नेह तक के सम्मान की भीख

अब नहीं माँग सकती हूँ मैं।

सहचर बन कर भी,

शरीर और मन पर नीले निशान देकर

प्यार की अभिव्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकती हूँ मैं।

मुझे पाने के लिए

सपनों को समझना होगा,

मेरे मन को जानना होगा,

आत्मा को पाना होगा,

और

दिल–दिमाग से नहीं,

'मन–रूपी–सौंद्रर्य' से स्वीकारना होगा।

मंजरी शर्मा
215, पॉकेट – 4,
सैक्टर – 25,
रोहिणी,
दिल्ली।
9911515424